International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 19-11-2021, Accepted: 05-12-2021, Published: 20-12-2021
Volume 7, Issue 6, 2021, Page No. 93-94

स्वामी विवेकानन्द का अल्मोड़ा स्पर्श

हेमन्त कुमार
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय मानिला, अल्मोडा, उत्तराखंड, भारत

सारांश
प्राचीन काल से भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा धर्म को लेकर सभी धर्मगुरुओं व विशेषज्ञों में असमंजस्य बना हुआ था कोई इसे सनातन या कोई इसे रूढ़िवादी कह कर पुकारता था। शिकागो सम्मेलन में जिस तरह से स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति व सभ्यता पर व्याख्यान दिया। सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत की पूर्व धारणा परिवर्तित हो गई। उसके उपरान्त स्वामी जी की विश्व पटल पर एक अलग व्यक्तित्व के रूप में पहचान हुई। शिकागो से पूर्व स्वामी जी को अपनी सरजमी पर उतनी प्रसिद्धि नहीं मिली थी, जितनी शिकागो सम्मेलन के बाद मिली। भारतीय जनमानस में भी अपनी संस्कृति व धर्म के प्रति जागरुकता नहीं थी। स्वामी जी ने सम्पूर्ण भारत की पैदल या कर के भारतीय संस्कृति व सभ्यता को और करीब से जानने का प्रयास किया। भारत भ्रमण के दौरान उनका उत्तराखण्ड भ्रमण भी हुआ। यहां आकर उन्होंने वेद, वेदान्तों पर अनेक व्याख्या दी है। कुमाउॅ आने पर सामान्य जन मानस की चेतना पर सकारात्म प्रभाव पडा।

मूल शब्दः रूढ़िवाद, असमंजस, सनातन, पाश्चात्य, आंचलिक, नैसर्गिक, प्रतिबिम्बित, निस्तब्धता, धर्मपिपासु, निराहार, गुणग्राही, कलावन्त, स्पंदनहीन आदि

प्रस्तावना

अल्मोड़ा नगर कूर्मांचल की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध रहा है। यह जिस पहाड़ी पर बसा हुआ है, उसके एक ओर कोसी तथा दूसरी ओर सुआल नदी बहती है। दूर से पूरा नगर एक घोड़े की पीठ पर बसे होने का आभास देता है, जिसका मुंह नारायण तेवाड़ी देवाल तथा हीराडुंगरी हो और पूंछ ब्राइट एंड कार्नर तथा कर्बला चुंगी की ओर। मध्यकाल में कुमाऊं के चंद राजाओं द्वारा बसाया यह अनूठा नगर चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हैः उत्तर में कसार देवी, पूर्व में बानड़ी देवी, पश्चिम में स्याही देवी तथा दक्षिण में मुक्तेश्वर के पर्वतश्रृंग नगर को एक सुविस्तृत दृश्यावली और अनुपम खुला सौन्दर्य प्रदान करते हैं।

सांस्कृतिक रूप से भी यह नगर बड़ा समृद्ध रहा है। अतीत में देश के सुदूर अंचलों से आकर बड़े–बड़े विद्वान यहां गुणग्राही नरेशों का कृतज्ञ संरक्षण पाते रहे और वर्तमान में भी देश और विदेश के अनेक कलावन्त, साधक और आध्यात्मिक सिद्ध पुरुषों का सुदीर्घ सम्पर्क इस नगर ने पाया है। पर्वतीय प्रदेश का कदाचित् ही कोई और नगर इस तरह की विविध प्रतिभाओं को अपनी ओर आकर्षित कर पाया हो। स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी सरीखे महापुरूष ही नहीं ब्रूस्टर और रुडोल्फ सरीखे प्रतिभाशाली चित्रकार एवं पंडित उदयशंकर और रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे कलाकार भी यहां निवास कर कला साधना कर चुके हैं। आध्यात्मिक जिज्ञासा तथा कलात्मक सौन्दर्य–बोध दोनों को उन्मेष प्रदान करने वाली कोई बात निश्चय ही यहां के वायुमण्डल में रही है। तभी कलाकारों, खोजियों, साधकों की एक अटूट परम्परा पिछली शताब्दियों से अब तक इस नगर के परिवेश से जुड़ी रही है।

स्वामी विवेकानन्द जी की अल्मोड़ा की इस पवित्र आंचल में यात्रा करने की तीव्र इच्छा थी। वह हिमालय के किसी एकांतवास में गहन समाधि लेना चाहते थे। इसी इच्छा के लिए स्वामी जी ने 1888 में कलकत्ता से प्रस्थान किया वे ऋषिकेश पहुंचे यहां से उनकी इच्छा बद्रीनाथ यात्रा करने की भी हुई। अचानक उनके शिष्य सदानन्द का स्वास्थ्य खराब होने के कारण बद्रीनाथ की यात्रा छोड़नी पड़ी। 19 जून 1989 को अखण्डानन्द द्वारा अल्मोड़ा के बद्रीशाह को लिखे गये पत्र में स्वामी जी के अल्मोड़ा में आगमन का प्रथम संकेत मिलता है। जिसमें विवेकानन्द जी को गुरुभाई नाम से संबोधित किया गया है। जैसे ही स्वामी जी कलकत्ता से अल्मोड़ा के लिए प्रस्थान हो रहे थे एक बार फिर भाग्य ने बाधा डाल दी। उसी दिन उनके प्रिय शिष्य सदानन्द का अचानक स्वास्थ्य खराब होने के कारण इस यात्रा को भी स्थगित करना पड़ा। किन्तु अल्मोड़ा जाने का विचार उन्होंने नहीं छोड़ा।

आखिरकार 1890 में उन्होंने आल्मोड़ा की यात्रा की। 6 जुलाई को उन्होंने अपने दो गुरुभाई शारदानन्द और वैकुण्ठनाथ जो कि उस समय अल्मोड़ा में ही थे को पत्र लिखा "मार्ग व्यय का प्रबन्ध हो जाने पर में शीघ्र अल्मोड़ा आना चाहता हूँ। वहां से गढ़वाल के लिए प्रस्थान करुंगा जहां गंगा तट पर स्थित किसी स्थान पर दीर्घ काल के लिए ध्यान में बैठ सकूं। गंगाधर मेरे साथ आ रहा है।"

पहाड़ी की तलहटी पर स्थित "कुमाऊँ का द्वार" नाम से प्रसिद्ध काठगोदाम रेलवे स्टेशन में स्वामी विवेकानन्द अखण्डानन्द के साथ हाथ में छड़ी और कमण्डल लिए पहुंचे। वहां से दोनों नैनीताल के लिए प्रस्थान हुए। वहां से अल्मोड़ा तक उन्होंने पैदल यात्रा की भोजन के लिए उन्होंने भिक्षा का आश्रय लेते थे। किन्तु भोजन का सौभाग्य कभी–कभी मिल पाता था। पैदल यात्रा करते–करते कोसी नदी के तट पर स्थित काकड़ी घाट नामक स्थान पर पहुंचे। वहां एक विशाल पीपल वृक्ष के नीचे बैठे अकस्मात् उनके मुख से–'यह स्थान ध्यान करने के लिए कैसी रमणीय जगह है' निकला। उसी समय अचानक उनका शरीर कठोर एवं स्पंदनहीन हो गया। मानो प्राणतत्व ही निकल गया हो। स्वामी जी लम्बे समय तक समाधि में ही लीन रहे। जागृत होने पर वह कहने लगे 'आह् गंगाधर मैं अभी अपने जीवन के महानतम क्षणों से गुजर रहा हूँ। मुझे जीवात्मा और परमात्मा के एक होने का अद्भुत अनुभव हुआ। मैंने अत्यन्त तुच्छ अणु में विराट विश्व का दर्शन किया।' इस अनुभूति से वे इतने प्रभावित हुए कि अल्मोड़ा पहुंचने तक इस विषय के अतिरिक्त किसी अन्य विषय पर बात नहीं की।

अल्मोड़ा मार्ग की चढ़ाई चढ़ते–चढ़ते उनका निराहारी शरीर अचेत होने लगा। एक छोटे से मुस्लिम कब्रिस्तान के सामने मूर्छित होकर गिर पड़े। साथी अखण्डानन्द उनकी यह हालत देख जल की तलाश में निकल पड़े। इसी बीच एक फकीर की नजर स्वामी जी पर पड़ी उसके हाथ में एक ककड़ी थी । उसने इस ककड़ी को स्वामी जी को भेट किया। किन्तु स्वामी जी का शरीर सामर्थ्यहीन था जिस कारण वह हाथ आगे नहीं बढ़ा सके। अतः स्वामी जी ने धीमे स्वर में फकीर को ककड़ी मुंह में डालने के लिए निवेदन किया। तब वह फकीर 'मैं एक मुसलमान हूँ' आप मेरे हाथ का कैसे खा सकते हैं कहकर पीछे हटने लगा। स्वामी जी ने उत्तर दिया तो इसमें क्या हुआ? क्या हम सब भाई नहीं?

इस यात्रा में स्वामी जी ने केवल साधना की और कुछ चन्द परिचित लोगों से मुलाकात की। अल्मोड़ा में वह कई दिनों तक खजांची मोहल्ले में स्व. बद्री शाह के मेहमान बनकर रहे। खजांची मोहल्ले का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है। इस मोहल्ले में रहने वाले ठुलघरिया शाह परिवार चंद शासकों और अंग्रेजों के खजांची रहे। इसी कारण इसका नाम खजांची मोहल्ला रखा गया। यही वह मोहल्ला है जहां स्वामी विवेकानंद हिमालय यात्रा के दौरान दो बार शाह के मेहमान बनकर रहे।

सात वर्षों बाद 1897 में स्वामी जी दूसरी बार अल्मोड़ा यात्रा पर आये। इस यात्रा के समय वह अज्ञात सन्यासी नहीं थे। क्योंकि वह शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन से विश्व विख्यात स्वामी विवेकानन्द बन चुके थे। उनके आगमन पर अल्मोड़ा में उनका भव्य स्वागत हुआ। पूरे नगर को सजाया गया था। लोधिया से एक सुसज्जित घोड़े में उन्हें नगर में लाया गया और 11 मई 1897 के दिन खजांची बाजार में उन्होंने जन समूह को संबोधित किया। इस स्थान पर तब पांच हजार लोग एकत्र हुए थे। अभिनन्दन समारोह के दौरान स्वामी विवेकानन्द उस फकीर को पहचान गए जिसने 1890 की प्रथम हिमालय यात्रा के दौरान करबला के निकट स्वामी जी के अचेत होने पर ककड़ी खिलाकर उनकी जान बचाई थी। स्वामी जी ने उस फकीर का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद किया। उसके पास गये और उसे दो रुपये भी दिये।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने संबोधन में कहा था "यह हमारे पूर्वजों के स्वप्न का प्रदेश है। भारत जननी श्री पार्वती की जन्म भूमि है। यह वह पवित्र स्थान है जहां भारत का प्रत्येक सच्चा धर्मपिपासु व्यक्ति अपने जीवन का अंतिम काल बिताने का इच्छुक रहता है। यह वही भूमि है जहां निवास करने की कल्पना मैं अपने बाल्यकाल से ही कर रहा हूं। मेरे मन में इस समय हिमालय में एक केन्द्र स्थापित करने का विचार है और संभवतः मैं आप लोगों को भली भांति यह समझाने में समर्थ हुआ हूं कि क्यों मैंने अन्य स्थानों की तुलना में इसी स्थान को सार्वभौमिक धर्मशिक्षा के एक प्रधान केन्द्र के रूप में चुना है।"

वह कहते हैं "इन पहाड़ों के साथ हमारी हिन्दुत्व परम्परा की श्रेष्ठतम स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। यदि धार्मिक भारत के इतिहास से हिमालय को निकाल दिया जाय तो उसका अत्यल्प ही बचा रहेगा अतएव यहां एक केन्द्र अवश्य चाहिए। यह केन्द्र केवल कर्म प्रधान न होगा, बल्कि यहीं निस्तब्धता, ध्यान तथा शांति की प्रधानता होगी मुझे आशा है कि एक ना एक दिन मैं इसे स्थापित कर सकूंगा। उल्लेखनीय है कि 1916 में स्वामी विवेकानन्द के शिष्य स्वामी तुरियानंद और स्वामी शिवानंद ने अल्मोड़ा में ब्राइट एंड कार्नर पर एक केन्द्र की स्थापना कराई। जो आज रामकृष्ण कुटीर नाम से जाना जाता है।"

इस भ्रमण (1897) के दौरान स्वामी विवेकानन्द ने करीब तीन माह तक देवलधार और अल्मोड़ा में निवास किया। इस अंतराल में उन्होंने स्थानीय लोगों के आग्रह पर अल्मोड़ा में तीन बार विभिन्न सभागारों में भी व्याख्यान दिया। 28 जुलाई, 1897 को अल्मोड़ा के तत्कालीन इंग्लिश क्लब में हुए व्याख्यान की अध्यक्षता तत्कालीन गोरखा रेजीमेंट के प्रमुख कर्नल पुली ने की। इसमें कई अंग्रेज अफसरों के अलावा अल्मोड़ा के स्थानीय लोग शामिल हुए। स्वामी विवेकानन्द 2 अगस्त 1897 में अल्मोड़ा से लौट गए।

अल्मोड़ा की सबसे बड़ी विशेषता उसका सांस्कृतिक खुलापन है जो उसके नैसर्गिक खुलेपन के समरूप है। यही देश और विदेश के अनेक कलावन्त, साधक और आध्यात्मिक सिद्ध पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह नगर कुमाऊं की विशिष्ट आंचलिक संस्कृति का गढ़ रहा है। यहां के प्रतिभा सम्पन्न लेखक, संगीतज्ञ, राजनेता और यहां के उत्सव–पर्व अखिल भारतीय संस्कृति की व्यापकता को प्रतिबिम्बित करते रहे हैं।

संन्दर्भ सूची

1. 'कुमांऊँ का इतिहास', बद्रीदत्त पाण्डे, प्रकाशकः श्याम प्रकाशक अल्मोड़ा बुक डिपो, 1937
2. 'उत्तराखण्ड की विभूतियां', शति प्रसाद शकलानी, उत्तरा प्रकाशन, रुद्रपुर, 2001
3. https://www.kafaltree.com/swami-vivekanand-uttarakhand-journeys/
4. 'विवेकानंद की आत्मकथा', मणि शंकर मुखर्जी (शंकर) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
5. स्वमी विवेकानन्द, जीवन एवं विचार, डॉ. सन्तोष कुमार महर्षि, नई दिल्ली